श्री रुद्रमहालय

भगवान रुद्रनाथ/ गोपीनाथ को समर्पित

श्री रुद्रनाथ गोपीनाथ मंदिर प्रबंधन समिति द्वारा प्रकासित

प्रस्तावना

दिनांक 21 जुलाई 2024 एवं दिनांक 28 जुलाई 2024 को आयोजित बैठक मैं सर्व सम्मति से लिए गए निर्णय के अनुसार श्री गोपीनाथ [गोपेश्वर] मंदिर और श्री रुद्रनाथ मन्दिर तथा उसकी निधियों तथा राजस्व विभाग उत्तराखंड के भूमि सम्बन्धी अभिलेखों मे लेखांकित श्री रुद्रनाथ गोपेश्वर मन्दिर की भूमि के उत्तम प्रशासन और उचित व्यवस्था / प्रबंधन के उदेश्य हेतु श्री रुद्रनाथ गोपीनाथ मन्दिर समिति का गठन किए जाने का प्रस्ताव पारित किया गया | दिनांक 13 अगस्त 2024 को समस्त ग्रामवासियों की उपस्थिति में श्री रुद्रनाथ गोपीनाथ मन्दिर समिति की प्रबंध कार्यकारणी का गठन सर्व सम्मति से निमन्न प्रकार से किया गया |

संस्था की प्रबन्ध कार्यकारणी समिति

क्र० सं०	नाम पदाधिकारी	पद	क्र० सं०	नाम पदाधिकारी	पद
1	श्री मनोज भट्ट	अध्यक्ष	2	श्री मनीष नेगी	वरिष्ट उपाध्यक्ष
3	श्री शांति प्रसाद भट्ट	सचिव	4	श्री हरीश भट्ट	उपाध्यक्ष
5	श्री महेंद्र तिवाड़ी	सह सचिव	6	श्री किशन सिंह बिष्ट	कोषाध्यक्ष
7	श्री अमित रावत	मंदिर भण्डारी			

प्रबंधन कार्यकारणी के सदस्य

क्रम संख्या	नाम पदाधिकारी	पद	क्रम संख्या	नाम पदाधिकारी	पद
1	श्री विनय भट्ट	सदस्य	13	श्री दीपक बिष्ट	सदस्य
2	श्री सुनील नेगी	सदस्य	14	श्री विनय सेमवाल	सदस्य
3	श्री चंडी प्रसाद तिवारी	सदस्य	15	श्री नरेश भट्ट	सदस्य
4	श्री मनीष भट्ट	सदस्य	16	श्री अनूप भण्डारी	सदस्य
5	श्री प्रदीप पँवार	सदस्य	17	श्री बृजमोहन बिष्ट	सदस्य
6	श्री आयुष चौहान	सदस्य	18	श्री कमलेश रावत	सदस्य
7	श्री होरी लाल किमोठी	सदस्य	19	श्री नरेंद्र कोतवाल	सदस्य
8	श्री सत्येन्द्र असवाल	सदस्य	20	श्री शशीधर भट्ट	सदस्य
9	श्री प्रमोद बिष्ट	सदस्य	21	श्री राम प्रसाद भट्ट	सदस्य
10	श्री दुर्गा प्रसाद भट्ट	सदस्य	22	श्री सुनील चौहान	सदस्य
11	श्री आशीष भट्ट	सदस्य	23	श्री कैलाश तिवारी	सदस्य
12	श्री महेंद्र नेगी	सदस्य	24	श्री दिनेश पासवान	सदस्य

माननीय सरंक्षक मण्डल

क्रम संख्या	नाम पदाधिकारी	क्रम संख्या	नाम पदाधिकारी
1	श्री प्रयाग दत्त भट्ट	7	श्री पुष्कर सिंह बिष्ट
2	श्री जगदंबा प्रसाद भट्ट	8	श्री गोपाल दत्त भट्ट
3	श्री जनार्दन प्रसाद तिवारी	9	श्री पूरन सिंह बिष्ट
4	श्री बीरेंद्र सिंह रावत	10	श्री रणजीत सिंह बिष्ट
5	श्री बंसीधर भट्ट	11	श्री धनराज सिंह नेगी
6	श्री सयन सिंह बिष्ट	12	श्री बद्री प्रसाद भट्ट

संस्था का उदेश्य

संस्था के सभी उदेश्य चेरीटेबिल तथा अव्यवसायिक है | संस्था कोई राजनैतिक ट्रैड यूनियन तथा संघ की गतिविधियों को संचालित नहीं करता है | श्री गोपीनाथ [गोपेश्वर] मंदिर और श्री रुद्रनाथ मन्दिर तथा उसकी निधियों तथा जनपद के अंतर्गत राजस्व विभाग उत्तराखंड के भूमि सम्बन्धी अभिलेखों मे दर्ज श्री रुद्रनाथ गोपेश्वर मन्दिर की भूमि के उत्तम प्रशासन और उचित व्यवस्था / प्रबंधन के उदेश्य हेतु श्री रुद्रनाथ गोपीनाथ मन्दिर समिति का गठन किया गया है |

मंदिर' का तात्पर्य श्री गोपीनाथ [गोपेश्वर] मंदिर और श्री रुद्रनाथ मंदिर से है | श्री गोपीनाथ [गोपेश्वर]श्री रुद्रनाथ मंदिर की स्थिति में, उसके परिसर के भीतर अन्य मंदिर भी संमलित हैं| श्री गोपीनाथ [गोपेश्वर] मंदिर परिसर के भीतर जिनमें श्री नवदुर्गा , हनुमानजी, अनुसूया मन्दिर और उक्त के भीतर स्थित अन्य सभी छोटी छवियां और अन्य अधीनस्थ मंदिर के अंतर्गत आने वाले चामुंडा देवी , चंडिका [चांडी] देवी , वैतरणी कुंड तथा वैतरणी कुंड परिसर , वराह{बारे] देवता तौक ,झाकदेवता तौक, डूँगरधार तौक [दीनदयाल पार्क] गणेश मंदिर [धयोऊ देखनी] तथा दमौ पावे देवता तौक तीर्थस्थल भी संमलित हैं| श्री रुद्रनाथ मंदिर की स्थिति में बणधयौ देवता , स्वर्ग द्वारी पांडव मंदिर नारद कुंड एवं बैतरनी कुंड तथा सरस्वती कुंड भी संमलित हैं,|

प्रबंधन समिति द्वारा गोपेश्वर एवं रुद्रनाथ मंदिर मे परंपरा के अनुसार चली आ रही पूजा पद्धति तथा पुजारियों के पूजा के अधिकार को यथावत बनाए रखेगी |गोपेश्वर रुद्रनाथ मंदिर से सम्बंधित हक हकूधारियों के अधिकार को भी यथावत बनाए रखेगी| प्रबंधन समिति द्वारा प्रचलित रीति रिवाजों के अनुसार सभी अनुष्ठानों एवं त्योहारों का संचालन स्थानीय परंपरा के अनुसार चली आ रही पूजा पद्धति के

अंतर्गत किया जाएगा |श्री रुद्रनाथ एवं गोपेश्वर मन्दिर की राजस्व विभाग के अभिलेखों मे लिखित नाप भूमि तथा किसी भी प्रकार की चल अचल सम्पति का प्रबंधन , समिति द्वारा किया जाएगा |प्रबंधन समिति द्वारा प्रचलित स्थानीय रीति रिवाजों ,शिल्प , कला वास्तु कला के सरक्षण तथा धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के लिए कार्य करेगी |

श्री रुद्रनाथ एवं गोपेश्वर मन्दिर मे आने वाले तीर्थ यात्रियों की मूलभूत सुविधाओ के लिए कार्य करेगी |श्री रुद्रनाथ यात्रा मार्ग पर यात्री शैड , पेयजल , सुरक्षा एवं अन्य आधारभूयात्री व यात्रा सुविधाऔ का सरक्षण त व ढांचागत सुविधाओ के विकास के लिए कार्य किया जाएगा |

गोपेश्वर मंदिर

गोपेश्वर का अतीत बहुत समृद्ध है। हालांकि शुरुआती निवासियों के साक्ष्य अभी भी मायावी हैं, लेकिन दफन टीले बस्तियों का संकेत देते हैं। स्कंद पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में इस क्षेत्र को पवित्र केदार क्षेत्र के रूप में नामित किया गया है, जिसे केदारनाथ और बद्रीनाथ जैसे प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों द्वारा और भी बल दिया गया है। इस क्षेत्र ने कुनिंदा, किराता, खास और गढ़वाल सहित विभिन्न राज्यों के उत्थान और पतन को देखा है। माना जाता है कि कला और धर्म के संरक्षक कत्यूरी राजाओं ने 9वीं और 11वीं शताब्दी के बीच गोपेश्वर मंदिर का निर्माण किया था। प्राचीन त्रिशूल के साथ गोपेश्वर मंदिर, आदिबद्री और चांदपुरगढ़ में मंदिरों के खंडहर और जोशीमठ में मंदिरों का संग्रह जैसे ऐतिहासिक स्थल इस क्षेत्र की कलात्मक और धार्मिक विरासत के प्रमाण हैं। गोपेश्वर अतीत की एक आकर्षक झलक पेश करता है, जहाँ शुरुआती बस्तियाँ फली-फूलीं, शक्तिशाली साम्राज्यों ने शासन किया और हिंदू तीर्थयात्रा की गूँज आज भी गूंजती है। भगवान शिव की तपस्या और सती और कामदेव की कहानी से जुड़ी किंवदंतियाँ मंदिर के धार्मिक महत्व को बढ़ाती हैं। परिसर में कई शिव लिंगों की मौजूदगी शिव पूजा के साथ इसके दीर्घकालिक जुड़ाव को और भी रेखांकित करती है।

2 गोपेश्वर एक प्रमुख मंदिर स्थल प्रतीत होता है जो चमोली से लगभग 10 किमी दूर उखीमठ के रास्ते पर स्थित है। मुख्य मंदिर के परिसर में विभिन्न आकारों के लगभग इक्कीस अमलसारकों की उपस्थिति से पता चलता है कि इस स्थल पर कई और मंदिर थे, जबकि अब केवल कुछ ही मंदिर बचे हैं। मुख्य मंदिर, जिसे स्थानीय रूप से गोपीनाथ/रुद्रनाथ के नाम से जाना जाता है, जो कि शिव को समर्पित है, जिसकी पूजा स्वयंभू लिंग द्वारा की जाती है।

3 गोपीनाथ/रुद्रनाथ मंदिर परिसर के भीतर 16 फीट ऊंचा और 20 सेमी व्यास का एक विशाल धातु का त्रिशूल है। छठी-सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण, गणपतिनाग द्वारा रुद्र के मंदिर के सामने इसकी स्थापना का उल्लेख करता है। दिलचस्प बात यह है कि समय के साथ यह त्रिशूल गिर गया और पश्चिमी नेपाल के दुलु के राजा अशोक चल्ला (1191 ई.) ने इसे पुनः वर्तमान स्थान पर स्थापित किया, जैसा कि हमें नागरी लिपि में उसी त्रिशूल पर उत्कीर्ण उनके शिलालेख से उत्तराखंड के चमोली के गोपेश्वर में रुद्रनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित प्राचीन हिंदू वास्तुकला का एक प्रमाण है।

4 स्थापत्य विशेषताएँ और तत्व: मुख्य मंदिर, जिसे स्थानीय रूप से गोपीनाथ/रुद्रनाथ के रूप में जाना जाता है, शिव को समर्पित है, जिनकी पूजा का विषय स्वयंभू लिंग है। यह लैटिना शिखर के साथ नागर शैली में बनाया गया है। योजना और ऊंचाई पर त्रिरथ, इसका शिखर चारों

ओर चैत्य रूपांकनों से सुशोभित है, इसलिए इसे वास्तुशिल्प सिद्धांतों में जल शिखर कहा जाता है। इनमें से कुछ चैत्य रूपांकनों को भद्रमुखों से सुशोभित किया गया है। इसके ऊंचे शुकनासा की चंद्रशाला शिव को उनके नटराज रूप में दर्शाती है। शैलीगत रूप से, इस मंदिर की योजना और ऊंचाई के साथ-साथ अलंकरण के संदर्भ में मृत्युंजय मंदिर, जागेश्वर के साथ काफी समानता है इसके अलावा, तीन लघु मंदिर हैं, जिनमें से एक वल्लभी शैली का है और 9वीं से 11वीं ई.पू. के बीच का है।

5 मंदिर के निर्माण में मजबूत और सुंदर शिलाओं (पत्थरों) का उपयोग किया गया है, जो उस समय की असाधारण शिल्पकला को प्रदर्शित करते हैं, साथ ही लकड़ी के ढांचे की छत भी है। मंदिर प्रांगण के भीतर एक बड़ा, पाँच मीटर ऊँचा त्रिशूल है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसे आठ अलग-अलग धातुओं से बनाया गया है और यह 12वीं शताब्दी का है। इसके अलावा, तिबारी और रावल निवास नामक शैली में पारंपरिक रूप से निर्मित दो दो मंजिला इमारतें हैं। रुद्रनाथ[गोपेश्वर] मंदिर की वास्तुकला नागर शैली की सुंदरता और कौशल का उदाहरण है, जो अतिरिक्त मंदिरों की उपस्थिति और आसपास के तत्वों के ऐतिहासिक महत्व से और भी बढ़ जाती है।

रुद्रनाथ[गोपेश्वर] मंदिर के अतिरिक्त इस मंदिर से सम्बद्ध महिषासुर मर्धनी [चांडी देवी] मंदिर , चामुंडा देवी, डुमक जाख देवता ,दमौ पावे देवता ,बारे[बारह देवता]तोख ,बैतरणी कुंड एवं धयो देखनी [गणेश मंदिर] एवं ग्व्वसेपाणी ऐतिहासिक महत्व के मन्दिर / तीर्थ हैं|

प्राचीन काल में गोस्थल (Gosthal) नाम से प्रख्यात भगवान शिव के पंच केदारों में से एक चतुर्थ केदार एकानन श्री रुद्रनाथ जी का शीतकालीन गद्दी स्थल गोपेश्वर जो वर्तमान में चमोली जिला मुख्यालय होने से जहाँ जिले की प्रशाषनिक गतिविधियों का केंद्र है वहीं प्राचीन काल मे यह धार्मिक सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक केंद्र भी रहा है।

केदार खंड स्कंद पुराण

केदारखंड में यहाँ के महात्म्य से अवगत कराते हुए भगवान शिव माता पार्वती से इस क्षेत्र को मम आलय (अपना घर) बताते हुए कहते है कि –

“अग्नितीर्थे नरः स्नात्वा सर्वपापे:प्रमुच्यते। यत्र तत्र स्थले देवी शिव लिंगान्यकेशः।।

तस्माद्वे पश्चिमे भागे गोस्थलकं स्मृतम। तन्नाहं सर्वदा देवी निवसामी त्व्या सह:”।।

अर्थात् मेरे केदार क्षेत्र में जहाँ- यहाँ वहाँ चारों तरफ अनेक शिवलिंग है उसके पश्चिम भाग मे गोस्थल नाम का एक तीर्थ है जहाँ में सर्वदा तुम्हारे साथ निवास करता हूँ। वहाँ पशिश्वर् नाम

से एक तीर्थ भी है, जो भक्तों की प्रीति बड़ाने वाला है। वहाँ एक पुष्प वृक्ष भी है जो असमय भी सदा पुष्पित रहता है।

इसके अतिरिक्त पौराणिक आख्यानों में यह उलेख भी मिलता है कि यही वह स्थान है जहाँ भगवान शिव ने कामदेव को भष्मीभूत किया था। तब कामदेव की पत्नी रति के तप से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे रति कुंड (वैतरणी कुंड) में मछली के रूप मे निवास करने का वरदान भी दिया था।

इसी प्रकार देवी पुराण के 93 वे अध्याय, मे भी इस क्षेत्र का विस्तार से उल्लेख मिलता है।

स्कंद पुराण के केदार खंड में भगवान शिव अपने आलय रुद्रमहालय जहाँ पर भगवान शिव ने अपनी जटा से बीरभद्र जी की उत्पत्ति की थी तथा पांडवों को अपने एकानन स्वरूप का दर्शन दिया था के बारे में माता पार्वती से कहते हैं–

ॐ शैलराजस्य पृष्ठे तु श्रुणु स्थानानी यानि वै। अस्ति पुण्या महादेवी नदी वैतरणी शुभा। पितृणाम् तोय दानेन तृप्तिर्भवती पुष्कला।।

तत्रापि परमं देवी पश्येद्रूद्रहिमालायम। हिमालये तु चद्देतं तृटिमात्रम् हि काँचनम्।।

तेन दत्ता भवेत्सर्वा सप्तद्वीपा वसुंधरा।आत्मानम् धातयेद्यस्तु भृगुपृष्ठेषु: मानवः।।

इंद्रेण धारिते छत्रे रुद्रलोक सः गच्छति।।

मेरे रुद्र महालय में जहाँ मै सदा तुम्हारे साथ निवासरत रहता हूँ वहाँ की पवित्र वैतरणी नदी में पित्रो को तर्पण देने से उन्हें सब प्रकार की तृप्ति प्रदान होती है। यदि कोई इस स्थान पर त्रुटि मात्र भी स्वर्ण दान कर दे तो उसे सात द्वीपों के बराबर भूमि दान करने का फल प्राप्त होता है। और जो ब्यक्ति यहाँ पर मेरी भक्ति में लीन होकर देह त्यागता है उसे मेरा धाम रुद्रलोक प्राप्त होता है।पौराणिक धार्मिक उल्लेख के साथ ही मंदिर परिसर में स्थित भगवान शिव के आकाश भैरव स्वरूप को समर्पित यह 71 फीट ऊँचा विशाल मंदिर अपनी विशालता के साथ ही पौराणिक वास्तुकला की दृष्टि से अद्वितीय होने के साथ ही विभिन्न कालखंडों की एतिहासिक जानकारियों का भी स्रोत है।

आठवीं शती ईसवी 8th Century CE के अंतिम दशकों में निर्मितइतिहासकारों द्वारा इसे प्रारंभिक कार्तिकेयपुर (Kartikeypur) राजाओं के काल में आठवीं शती ईसवी के अंतिम दशकों में निर्मित हुआ माना जाता है। संभवतः गणपति नाग (Ganapati Nag) द्वारा उल्लेखित रुद्रमहालय मे निर्मित शिव मंदिर का किसी प्राकृतिक प्रकोप में नष्ट होने के उपरांत कार्तिकेयपुर नरेशों द्वारा इसका पुन:र्निर्माण किया गया होगा।अपनी वास्तुकला के आधार पर यह मध्य हिमाद्री शैली में

त्रिरथ- विन्यास (रेखा लतिन शिखर शैली) का छत्र रेखा प्रसाद में चतुर्भुजाकार तल पर निर्मित है। मंदिर परिसर के प्रक्रिमा पथ में चंडी, चामुंडा, गणेश, हनुमान तथा सप्त मातृका (नौदुर्गा) के प्राचीन मंदिर भी है।

मंदिर के प्रक्रिमा पथ में ही भगवान शिव के सदा वसंतम ह्रदया रविंदम के स्वरूप को धरा पर परिलक्षित करती सदा पुष्पित रहने वाली कुंज की वह बेल भी है जिसे स्थानीय निवासी कल्पवृक्ष कहते हैं तथा जिसके बारे में केदारखंड में भी उल्लेख मिलता है

" अन्यश्चय संप्रवक्ष्यमि चिन्हं तत्र सुरेश्वरी। एकस्तत्र पुष्पवृक्षो कालेपि पुष्पित:सदा।

इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर से ही सटे हुए तीन चार सदी पूर्व निर्मित दो भवन कोठा (रावल निवास) तथा पहाड़ी परंपरागत तिवारी भी है। जो तत्कालीन पहाड़ी कला के बेजोड़ नमूने है।यदि धार्मिक दृष्टि के साथ ही गोपीनाथ मंदिर की ऐतिहासिकता पर नजर डालें तो मंदिर के प्रांगण में स्थित लौह त्रिशूल अपनी धार्मिक आस्था के साथ ही इस पर उत्कीर्ण राजाओं की प्रशस्तियों के कारण उत्तराखंड के इतिहास के संदर्भ में कई काल खंडों की पौराणिक इतिहास की जानकारी को समेट हुए वर्तमान में उन्हें जानने का एक प्रमुख स्रोत भी है।केदार खण्ड पुराण मे इसकी धार्मिक महत्ता का वर्णन करते हुए इसको एक आश्चर्यप्रद त्रिशूल बताते हुए कहा गया है कि, यह बल पूर्वक दोनों हाथों से हिलाने पर भी नहीं हिलता लेकिन भक्तिपूर्वक कनिष्का अंगुली से हिलाने पर कंपायमान हो जाता है।

त्रिशूलं मामकं तत्र चिन्हमाश्चर्य रूपकम्।

ओजसा चेच्यालयते तन्नही कंपति कहिन्र्वित्।

कनिष्ठ्या तु सत्स्पृष्टम भक्त्या तत्कम्पे मुहु:।

मंदिर प्रागंण में पत्थर के एक चबूतरे के आधार स्तंभ पर स्थापित इस 16 फिट ऊँचे लौह त्रिशूल (जिसे कतिपय विद्वानों द्वारा अष्टधातु से निर्मित होना तथा इसके तीन फीट हिस्से का क्षतिग्रस्त होना भी बताया जाता है।) जिसके मध्य में एक परशु भी है। त्रिशूल को उसके आकार बनावट एवं उसमें उत्कीर्ण लेखों के आधार पर हम तीन भागों, ऊपरी फलक जो की त्रिशूल का मुख भाग है। मध्य फलक जो परशु तथा ऊपरी फलक (मुख भाग) के मध्य का भाग जिस पर नाग वंशीय गणपति नाग का प्रशस्ति लेख अंकित है।और परशु के नीचे और आधारस्तंभ के मध्य का भाग जिस पर अशोक चल्ल का प्रशस्ति लेख है, को आधार फलक में विभक्त कर सकते है।

ब्राह्मि लिपि में उत्कीर्ण अभिलेख – Brahmi Script inscriptions on the Gopinath Trident

त्रिशूल के आधार फलक पर नाग वंश के प्रतापी शासक गणपति नाग का दक्षिणी ब्राह्मि लिपि में उत्कीर्ण अभिलेख है। जिसमें गणपति नाग के अतिरिक्त तीन अन्य नाग राजाओं स्कंद नाग, विभु नाग, अंशु नाग के नामों का भी उल्लेख है। अभिलेख से ही यह जानकारी भी मिलती हैं की "गणपति नाग ने अपने द्वितीय राजवर्ष में (संभावत:अपने राज्या रोहण के द्वितीय वर्ष) रुद्रमहालय के समक्ष शक्ति (त्रिशूल) की स्थापना की। इतिहास कारों द्वारा उक्त अभिलेख के अंकन का काल छटविं (600ई.) शताब्दी होना बताया गया है। उक्त अभिलेखीय साक्ष्य के आधार पर कहा जा सकता है कि गोपीनाथ के विशाल मंदिर प्रांगण में त्रिशूल जिसे उत्कीर्ण लेख में शक्ति स्तंभ कहा गया है, की स्थापना 6वीं से 7वीं शताब्दी के दौरान नागवंशीय शासक गणपति नाग द्वारा ही की गयी होगी।

इसी प्रकार त्रिशूल के ऊपरी फलक पर नेपाल के मल्ल राजा अशोक चल्ल का 1191 ई. का निम्नवत लेख भी उत्कीर्ण है।

कृत्वां दिग्विजयम् महालय महादेवालय संस्था मिमाम्,

राज्ये श्री मद्शोकचल्ल नृपतिः स्तंभचच्छ लानीतवान।।

पश्चाच्च प्रतिरोप्य तत्र विजयस्तंभ प्रतिष्ठा मगाद।

उत्खात प्रतिरोपणम हिमहतायुक्तम नातानां पुनः।।

लौह त्रिशूल

जिसमें अशोकचल्ल (Ashok Chall) द्वारा इस क्षेत्र (गढ़वाल) में विजय का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त अशोक चल्ल का यहाँ से एक शिलापट लेख भी मिला है। जिसमें उसके द्वारा यहाँ पर जिर्णोद्वार कार्य करने तथा एक सम्मेलन बुलाने की जानकारी मिलती है। इसमें इसे परम भट्टारक, महायानी बौद्ध बताते हुए उल्लेख मिलता है कि केदार क्षेत्र की विजय के उपरांत उसके द्वारा यहाँ पर भूमि दान तथा भोज दिये जाने के साथ ही यही पर अपने अधीनस्थ राजाओं को जिसे उसने युद्ध में परास्त किया था का सम्मेलन बुलकार विजित प्रदेश उन्हें लौटा दिये थे।

अशोक चल्ल (1191-1209) पश्चमी नेपाल के डोटी (Doti) राजवंश में जयभद्रमल्ल की पाँचवीं पीढी का शासक था। उसके द्वारा उत्कीर्ण इस लेख से मल्लों के इस क्षेत्र को विजित कर शासन करने की जानकारी मिलती है। अशोक चल्ल ने कत्युरियों (Katyuri) को पराजित कर अपने शासन के दौरन इस वंश का राज्य विस्तार मानस भूमि तथा केदारभूमि (गढ़वाल, कुमांऊ) तक किया था। अशोक चल्ल के बारे में यह जानकारी भी मिलती हैं कि वह एक उच्चकोटि का सेनानायक होने के साथ ही कवि और नृत्यवेता भी था। उसके द्वारा नाट्यशात्र् पर नृत्याध्याय नामक ग्रंथ की भी रचना की गई थी। हालांकि उसकी उत्तराखंड विजय के संदर्भ में तो एक आक्रांता ही कहा जायेगा।

उक्त दोनों लेख जो वर्तमान समय में अप्राप्य है तथा जिन्हे प्रशस्ति लेख कहना ज्यादा उचित होगा में गणपति नाग के लेख से जो कि नाग वंश का सर्वाधिक प्रतापी राजा था, से 600 ई. से 700 ई. के कालक्रम में गढ़वाल में नागों द्वारा शासन किये जाने की जानकारी प्राप्त होती है। इस वंश के पत्तन के कारणो तथा उनकी शासन ब्यवस्था के बारे में स्रोतों के अभाव के कारण और अधिक जानकारी नही मिल पायी है। जिस कारण इस विषय पर अनुमान लगा पाना कठिन है। गढवाल में इनकी उपस्थिति की जानकारी का अभी तक यह त्रिशूल अभिलेख ही एक मात्र स्रोत है। जम्मू से गणपति नाग के एक अन्य अभिलेख मिलने से इस बात की पुष्टि होती है कि इनके साम्राज्य का विस्तार जम्मू कश्मीर तक था।

गोपेश्वर चतुर्थ केदार का गद्दी स्थल होने के कारण प्राचीन काल से ही धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तो रहा ही है। त्रिशूल पर अंकित अभिलेखों से जैसे गणपति नाग द्वारा यहाँ पर शक्ति स्तंभ स्थापित करने की बात हो या अशोक चल्ल द्वारा उससे पराजित राजाओं का यहाँ पर सम्मेलन आयोजित करवाने का उल्लेख हो आदि से स्पष्ट हो जाता है कि यह उस दौर (6 वीं 7वीं शताब्दी) में राजनैतिक, आर्थिक गतिविधि के साथ ही रणनीतिक दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा होगा। यदि उस काल खंड के समग्र इतिहास पर दृष्टि डाले तो उस दौर में शक्ति शाली शासकों द्वारा चाहे वो विशाल मंदिरों का निर्माण हो या अभिलेख उत्कीर्ण कराने का विषय हो तथा कोई राजनैतिक आयोजन करवाना हो आदि को हमेशा धार्मिक, सामरिक व आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों पर ही किये जाने के अधिक प्रमाण मिलते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह गुप्तोत्तर काल से लेकर मध्य काल तक गोपेश्वर राजनैतिक घटनाओं के अतिरिक्त एक जाग्रत तीर्थ के रूप में प्रमुख धार्मिक केंद्र स्थल भी रहा है। वर्तमान मे यह लौह त्रिशूल और भगवान गोपीनाथ का विशाल मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा उत्तराखंड के 42 स्मारकों में केंद्रीय स्मारकों की सूची में तथा भारत के 100 महत्वपूर्ण स्मारकों के साथ आदर्श स्मारकों की सूची में शामिल है।

रुद्रनाथ मंदिर

देवभूमि उत्तराखंड़ के पंच केदारों में से एक चतुर्थ केदार रुद्रनाथ, संपूर्ण विश्व में भगवान शिव का एकमात्र ऐसा धाम है, जहां भगवान शिव के मुख के दर्शन होते हैं। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि द्वापर काल में भगवान शिव ने पाण्डवों को यहीं पर अपने मुख के दर्शन दिए थे। यहां पर तभी से भगवान शिव का एकानन रूप के साथ मुखाकृति वाला स्वयंभू शिवलिंग विराजमान हैं। भगवान शिव को समर्पित रुद्रनाथ मंदिर, जो पंचकेदारों में चतुर्थ केदार के रूप में प्रसिद्ध है, एक अत्यंत प्राचीन, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा स्थापत्य दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण धरोहर है। यह मंदिर उत्तराखंड के जनपद एवं तहसील चमोली के राजस्व ग्राम रुद्रनाथ में स्थित है, जो समुद्र तल से 2290 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय की गोद में प्राकृतिक बुग्यालों के मध्य स्थापित है। मंदिर तक पहुँचने हेतु गोपेश्वर से लगभग 18 किलोमीटर की पैदल यात्रा (ट्रेक) करनी पड़ती है। यह मंदिर एक प्राकृतिक शिला-गुफा के भीतर स्थित है, जिसमें भगवान शिव के रौद्र एकानन मुख स्वरूप की स्वयंभू श्यामवर्णी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यही वह स्थान है, जहाँ पांडवों को भगवान शिव के मुख स्वरूप के दर्शन हुए थे। यह संपूर्ण विश्व में भगवान शिव का एकमात्र धाम है, जहाँ मुखलिंग रूप में दर्शन होते हैं। मंदिर क्षेत्र में नारद कुंड, गणेश विग्रह, बैतरनी कुंड, सारस्वत कुंड, मानस कुंड, लाल माटी आदि अनेक तीर्थ है, जो इस स्थल की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाते हैं।

यह मंदिर एक पाषाणगुफा में स्थित है, जो अत्यधिक प्राचीन है। मंदिर परिसर में कोई संरचनात्मक सुरक्षा या वैज्ञानिक संरक्षण की व्यवस्था नहीं है। मौसमी प्रभाव, वर्षा, बर्फबारी एवं पर्यटकीय दबाव के कारण मंदिर की मूल संरचना पर संकट उत्पन्न हो सकता है। श्री रुद्रनाथ गोपीनाथ मंदिर प्रबन्धन समिति की ओर से यह प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं कि भगवान रुद्रनाथ मंदिर को राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर संरक्षित स्मारक घोषित किया जाए तथा इसे पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षण में लिया जाए, जिससे इसके ऐतिहासिक, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक स्वरूप का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित हो सके।

देवभूमि उत्तराखंड़ के पंच केदारों में से एक चतुर्थ केदार रुद्रनाथ, संपूर्ण विश्व में भगवान शिव का एकमात्र ऐसा धाम है, जहां भगवान शिव के मुख के दर्शन होते हैं। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि द्वापर काल में भगवान शिव ने पाण्डवों को यहीं पर अपने मुख के दर्शन दिए थे। यहां पर तभी से भगवान शिव का एकानन रूप के साथ मुखाकृति वाला स्वयंभू शिवलिंग विराजमान हैं। इसके अतिरिक्त नेपाल के पशुपतिनाथ में भगवान शिव के चतुरानन स्वरूप का तथा इंडोनेशिया में पंचानन स्वरूप का शिवलिंग विराजित हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार महाभारत युद्ध में अपने ही स्वजनों की हत्या के कारण पांडव गोत्रहत्या के पाप से ग्रसित हो गये थे। गोत्रहत्या के पाप से मुक्ति के लिए भगवान श्री कृष्ण ने पाण्ड़वों को भगवान शिव की शरण में जाकर उन्हें प्रसन्न करने की सलाह दी। श्रीकृष्ण की सलाह पर पाण्ड़व शिव के दर्शन के लिए काशी गए। भगवान शिव महाभारत युद्ध के कारण पाण्ड़वों से नाराज थे और उन्हें दर्शन नही देना चाहते थे। पाण्डवों को अपने समीप आता देख शिव काशी से अंतर्ध्यान होकर हिमालय के केदार क्षेत्र में चले गये। पाण्ड़व भी उनका पीछा करते हुए हिमालय पर पहुँच गये। शिव ने पाण्डवों को अपने पीछे आता देख बैल का रूप धारण कर लिया। भीम ने बैल के रूप में शिव को पहचान दिया। भीम जैसे ही शिव को पकडने लगे शिव जमीन में घुस गये। भीम के द्वारा शिव को पकडने के दौरान बैल रूपी शिव का धड़ वाला भाग भूमि में ऊपर ही रह गया। शिव का धड़ वाला भाग जिस स्थान पर रहा वह प्रथम केदार कहलाया। यही केदार द्वादश ज्येतिर्लिंगों में केदारनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। शिव को ढूडंने के क्रम में हिमालय के जिन पांच स्थानों पर पाण्ड़वों को शिव के जिन पांच अंगों के दर्शन हुए वहां पर पाण्ड़वों द्वारा भगवान शिव के मंदिरों की स्थापना की गई। केदार क्षेत्र में स्थित होने के कारण ये स्थान पंच केदार कहलाए। पूर्व में जब पाण्ड़व गोत्र हत्या के पाप से मुक्ति के लिए मेरी शरण में आये तो मेरे केदार क्षेत्र में ही उन्हें गोत्र हत्या के पाप से मुक्ति मिली। मेरा यह मुक्ति दाता केदार देश तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। अपामार्ग से मेरा मुख महालय(रुद्रनाथ) में है।

पंच केदार

पंच केदारों में प्रथम केदार, केदारनाथ है जहां सर्वप्रथम पाण्डवों को भगवान शिव के धड़ के दर्शन हुए थे। द्वितीय केदार मध्यमहेश्वर में मध्य भाग(नाभि) के तथा तृतीय केदार तुंगनाथ में भुजा और चतुर्थ केदार रुद्रनाथ में मुख तथा पंचम केदार कल्पेश्वर में शिव की जटा के दर्शन हुए थे।

॥ॐ मृत्युंजय मंत्र॥

ॐ त्र्यम्बकँ य्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारूकमिव बन्धनान्न्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्। ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।

उर्व्वारूकमिव बन्धनादितोमुक्षीय मामुत:।

पौराणिक मंत्र

ॐ मृत्युंजयमहादेवं त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजराव्याधिपीडितं कर्मबन्धनै:॥

समय मंत्र

ॐ हौं जुं स: मृत्युंजयाय नम:॥

आदि शंकराचार्यरचित वेदसारशिवस्तोत्रम् : पशूनां पतिं पापनाशं

जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम।1।

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम्।

विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्निनित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्।2।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।

भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्।3।

शिवाकान्त शंभो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिञ्जटाजूटधारिन्।

त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप: प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप।4।

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम्।

यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्।5।

न भूमिर्नं चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।

न गृष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीड।6।

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।

तुरीयं तम:पारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम।7।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।

नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्।8।

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शंभो महेश त्रिनेत्।

शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्य:।9।

शंभो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।

काशीपते करुणया जगदेतदेक-स्त्वंहंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि।10।

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।

त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मके हर चराचरविश्वरूपिन।11।

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितो वेदसारशिवस्तवः संपूर्णः ॥

शुद्धि की अनिवार्यता:

इसे करने से पहले, अपने शरीर, मन और आत्मा को साफ़ रखे।

स्थिति निश्चित करें: इसको शांत, ध्यानित और धार्मिक वातावरण में करें।

उपयुक्त स्थान: इसका पाठ एक शांत और शुद्ध स्थान पर करें, जो स्थिर और अशोक हो।

ध्यान और समर्पण: पाठ करते समय शिव की ध्यान और समर्पण अपने मन में रखें।

आदर्श समय: पाठ सुबह या सायंकाल में करना उत्तम माना जाता है।

मंत्रों की जप: मंत्रों को स्थिरता और ध्यान से पढ़ें।

ध्यान : मंत्रों के पाठ के समय मन को ध्यान में रखें, और अपनी भक्ति और समर्पण का अभ्यास करें।

पूजन: इसके बाद, भगवान शिव की मूर्ति या फोटो को चादर, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजित करें।

ध्यान और आशीर्वाद: अंत में, भगवान शिव के ध्यान में रहें और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें।

शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नम:शिवाय॥1॥

मंदाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय।

मण्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नम:शिवाय॥2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।

श्रीनीलकण्ठाय बृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नम:शिवाय॥3

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नम:शिवाय॥4॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नम:शिवाय॥5॥

पञ्चाक्षरिमदं पुण्यं य: पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥6॥

॥ रुद्राष्टकं (तुलसीदास)॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥१॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।

करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥२॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।

स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा॥३॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।

मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥४॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।

त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥५॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।

चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥६॥

न यावत् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।

न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।

जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम्

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रिशैले मल्लिकार्जुनम्।उज्जयिन्यां महाकालमोमकारममलेश्वरम्॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमी तटे।हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रात: पठेन्नर:।सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

अन्यथा शरणम् नाऽस्ति, त्वमेव शरणम् मम्।तस्मात्कारूण भावेन्, रक्ष माम् महेश्वर:॥

शम्भु स्तुति

लंका प्रवेश के समय भगवान श्री राम ने रामेश्वरम में स्वयं शिवलिंग की स्थापना के साथ भगवान शिव का आह्वान किया था। शम्भु स्तुति को भगवान राम द्वारा रचित कहा जाता है, इस शम्भु स्तुति का उल्लेख ब्रह्म पुराण से लिया गया है।

शम्भुस्तुतिः का मूल रूप

नमामि शम्भुं पुरुषं पुराणं नमामि सर्वज्ञमपारभावम् ।

नमामि रुद्रं प्रभुमक्षयं तं नमामि शर्वं शिरसा नमामि ॥ १॥

नमामि देवं परमव्ययं तमुमापतिं लोकगुरुं नमामि ।

नमामि दारिद्र्यविदारणं तं नमामि रोगापहरं नमामि ॥ २॥

नमामि कल्याणमचिन्त्यरूपं नमामि विश्वोद्भवबीजरूपम् ।

नमामि विश्वस्थितिकारणं तं नमामि संहारकरं नमामि ॥ ३॥

नमामि गौरीप्रियमव्ययं तं नमामि नित्यंक्षरमक्षरं तम् ।

नमामि गौरीप्रियमव्ययं तं नमामि नित्यं क्षरमक्षरं तम् ।

नमामि चिद्रूपममेयभावं त्रिलोचनं तं शिरसा नमामि ॥ ४॥

नमामि कारुण्यकरं भवस्य भयंकरं वाऽपि सदा नमामि ।

नमामि दातारमभीप्सितानां नमामि सोमेशमुमेशमादौ ॥ ५॥

नमामि वेदत्रयलोचनं तं नमामि मूर्तित्रयवर्जितं तम् ।

नमामि पुण्यं सदसद्व्यतीतं नमामि तं पापहरं नमामि ॥ ६॥

नमामि विश्वस्य हिते रतं तं नमामि रूपाणि बहूनि धत्ते ।

यो विश्वगोप्ता सदसत्प्रणेता नमामि तं विश्वपतिं नमामि ॥ ७॥

यज्ञेश्वरं सम्प्रति हव्यकव्यं तथागतिं लोकसदाशिवो यः ।

आराधितो यश्च ददाति सर्व नमामि दानप्रियमिष्टदेवम् ॥ ८॥

नमामि सोमेशवरमस्वतन्त्रमुमापतिं तं विजयं नमामि ।

नमामि विघ्नेशवरनन्दिनाथं पुत्रप्रियं तं शिरसा नमामि ॥ ९॥

नमामि देवं भवदुःखशोकविनाशनं चन्द्रधरं नमामि ।

नमामि गङ्गाधरमीशमीड्यमुमाधवं देववरं नमामि ॥ १०॥

नमाम्यजादीशपुरन्दरादिसुरासुरैरचितपादपद्मम् ।

नमामि देवीमुखवादनानामीक्षार्थमक्षित्रितयं य ऐच्छत् ॥ ११॥

पञ्चामृतैर्गन्धसुधूपदीपैर्विचित्रपुष्पैर्विविधैश्च मन्त्रैः ।

अन्नप्रकारैः सकलोपचारैः सम्पूजितं सोममहं नमामि ॥ १२॥

॥ इति श्रीब्रह्ममहापुराणे शम्भुस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ शिवाष्टक ॥

जय शिव शंकर, जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे,

जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशि सुखसार हरे,

जय शशि शेखर, जय डमरूधर, जय जय प्रेमागार हरे,

जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित, अनन्त, अपार हरे,

निर्गुण जय जय, सगुण अनामय, निराकार साकार हरे,

पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥1॥

जय रामेश्वर, जय नागेश्वर, वैद्यनाथ, केदार हरे,

मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल ओंकार हरे,

त्रयम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर, जगतार हरे,

काशी पति श्री विश्वनाथ जय, मंगलमय, अघहार हरे,

नीलकण्ठ जय, भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय अविकार हरे,

पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥2॥

जय महेश, जय जय भवेश, जय आदिदेव, महादेव विभो,

किस मुख से हे गुणातीत, प्रभु तव अपार गुण वर्णन हो,

जय भवकारक, तारक, हारक, पातक-दारक शिव शम्भो,

दीन दुःखहर, सर्व सुखाकर, प्रेम-सुधाधर दया करो,

पार लगा दो भवसागर से, बन कर कर्णाधार हरे,

पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥3॥

जय मनभावन, जय अतिपावन, शोक नशावन शिवशम्भो,

विपद विदारन, अधम उबारन, सत्य सनातन शिवशम्भो,

सहज वचनहर, जलज नयनवर, धवल-वरन-तन शिवशम्भो,

मदन-कदन-कर, पाप-हरन-हर, चरन-मनन-धन शिवशम्भो,
विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर, जग के मूलाधार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥4॥

भोलानाथ कृपालु, दयामय, औढरदानी शिवयोगी,
निमिष मात्र में देते हैं, नव निधि मनमानी शिवयोगी,
सरल हृदय, अति करुणा सागर, अकथ कहानी शिवयोगी,
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर, बने मसानी शिवयोगी,
स्वयं अकिंचन, जन मन रंजन, पर शिव परम उदार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥5॥

आशुतोष ! इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना,
विषम वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना,
रूप सुधा की एक बूंद से जीवन मुक्त बना देना,
दिव्य ज्ञान भण्डार युगल चरणों में लगन लगा देना,
एक बार इस मन मन्दिर में कीजे पद संचार हरे,
पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥6॥

दानी हो, दो भिक्षा में, अपनी अनपायनी भक्ति प्रभो,
शक्तिमान हो, दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो,
त्यागी हो, दो इस असार-संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो,
परम पिता हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो,
स्वामी हो, निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे,

पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥7॥

तुम बिन 'बेकल' हूँ प्राणेश्वर, आ जाओ भगवन्त हरे,

चरण शरण की बांह गहो, हे उमा-रमण प्रियकन्त हरे,

विरह-व्यथित हूँ, दीन दुःखी हूँ, दीन-दयालु अनन्त हरे,

आओ तुम मेरे हो जाओ, आ जाओ श्रीमन्त हरे,

मेरी इस दयनीय दशा पर, कुछ तो करो विचार हरे,

पारवती पति हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥8॥

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्काराय च,

मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥